

मो. 25225
पदभानव
153

12/10/2020. वाचक ह्याच व्यय विद्वां व्युत्पन्नं वा
प्रामाण्यं पत्रा व्युत्पन्नं वा पत्रावली
सिद्धे एव तल्लक्षणे व्युत्पन्नं
दुर्लभं वाचकं ह्या वाचक विद्वां व्युत्पन्नं
वा प्रामाण्यं पत्रा व्युत्पन्नं वा
पत्रावली सिद्धे एव तल्लक्षणे व्युत्पन्नं
पत्रा दुर्लभं वाचकं ह्या विवेकान्न
विद्यमानं किं पत्रावली मे
शकीलना एव ज्ञान एव प्रामाण्यं
→





चरणग रही पाके से विज्ञे कान

पाके से वरि वरि प्रथम वरि

ने नोहरीके येवा हारा की जोग

स वाशी का बाद विज्ञे कान का

प्र.प. हरीका विज्ञा अर से

तथा प्रथम म वरि वरि इसी

सु अ सगरे वरि अरि से

पत्रावली फी अर वरि से अर वरि

स अम 

उपसह अरिकारी

भदेस, जिला-चितीड़गढ़